ASTRO ARPITA NATH

27 नक्षत्रों में गुलिक का प्रभाव और स्वभाव

Arpita Nath द्वारा · समय एवं फलित · 2026-09-13

वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, गुलिका (जिसे अक्सर मांदी के स्थान पर भी प्रयोग किया जाता है) सबसे प्रभावशाली अप्रकाशित छाया बिंदु या उपग्रह (Upagraha) है। शनि (Shani) की कार्मिक संतान माने जाने वाले गुलिका, पिछले जन्म के संचित कर्मों, छिपी हुई बाधाओं और गहरे मनोवैज्ञानिक ट्रिगर्स के एक मूक संचित स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।

गुलिक का मूल स्वभाव और प्रभाव

गुलिक स्वभाव से पापी (अशुभ) ग्रह है, लेकिन इसका प्रभाव काफी हद तक इस बात पर निर्भर करता है कि यह किस भाव, ग्रह और नक्षत्र में स्थित है।

• **ठहराव का कारक:** गुलिक जिस भी भाव या ग्रह से जुड़ता है, उसके कार्यों को धीमा कर देता है, उनमें कड़वाहट घोल देता है या उन्हें जटिल बना देता है; जिससे देरी, गलतफहमी या छिपी हुई चिंता उत्पन्न होती है।

• **अपवाद (उपचय भाव):** गुलिक तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में स्थित होने पर अनुकूल भौतिक परिणाम देता है। इन स्थानों पर, इसकी भारी और सतर्क ऊर्जा तीव्र प्रतिस्पर्धी भावना, शत्रुओं से मुकाबला करने की क्षमता और मजबूत भौतिक सहनशक्ति में बदल जाती है।

• **ग्रहों के साथ युति:** किसी अन्य ग्रह के साथ युति होने पर, गुलिक उस ग्रह के स्वाभाविक प्रभाव को विकृत कर देता है (उदाहरण के लिए, चंद्रमा के साथ होने पर यह अकारण चिंता पैदा करता है; सूर्य के साथ होने पर अधिकारियों के साथ अहंकार का टकराव कराता है; बुध के साथ होने पर वाणी में देरी या अत्यधिक सोच-विचार की स्थिति बनाता है)।

27 नक्षत्रों में गुलिक का प्रकटीकरण

किसी विशिष्ट नक्षत्र में गुलिक की उपस्थिति यह तय करती है कि उसका अवशिष्ट कार्मिक प्रभाव दैनिक जीवन में किस प्रकार प्रकट होता है:

केतु-शासित नक्षत्र (पिछले कर्मों से मुक्ति)

• **अश्विनी**: बिना सोचे-समझे शुरुआत और फिर अचानक देरी; सिर पर चोट या सूजन का जोखिम; नई पहलों में धैर्य रखने की आवश्यकता।

• **मघा**: भारी पितृ ऋण (पितृ दोष का प्रभाव); पारिवारिक वंश, मान-सम्मान या पैतृक संपत्ति को लेकर दबाव।

• **मूल**: गहरा मनोवैज्ञानिक शुद्धिकरण; करियर या रहन-सहन की स्थितियों में अचानक उथल-पुथल, जो पूरी तरह से आत्मनिर्भर बनने पर विवश करती है।

शुक्र शासित नक्षत्र (रिश्तों और विलासिता में बदलाव)

• **भरणी**: भावनात्मक संयम रखने में संघर्ष; गंभीर रचनात्मक रुकावटें या साझा वित्त को लेकर रिश्तों में तनाव।

• **पूर्वा फाल्गुनी**: सुख-सुविधाओं का आनंद लेने में देरी; अंतर्निहित चिंता या थकान से बचने के लिए अत्यधिक भोग-विलास की प्रवृत्ति।

• **पूर्वाषाढ़ा**: घमंड या अत्यधिक आत्मविश्वास के कारण अचानक रणनीतिक असफलताएं; पेशेवर बातचीत में विनम्रता की आवश्यकता।

सूर्य-शासित नक्षत्र (अहंकार और अधिकार की परीक्षा)

• **कृत्तिका**: तीखी, आलोचनात्मक वाणी; पाचन संबंधी संवेदनशीलता; पिता तुल्य व्यक्तियों या कॉर्पोरेट प्रमुखों के साथ मतभेद।

• **उत्तरा फाल्गुनी**: औपचारिक अनुबंधों या सामाजिक प्रतिबद्धताओं में गलतफहमियां; सार्वजनिक मान्यता मिलने में देरी।

• **उत्तरा आषाढ़ा**: कर्तव्य की भारी भावना; नेतृत्व से जुड़े शुरुआती जीवन के संघर्ष जो अंततः दीर्घकालिक सहनशीलता प्रदान करते हैं।

चंद्र-शासित नक्षत्र (मन और भावनात्मक स्वास्थ्य)

• **रोहिणी**: भौतिक परिणामों से अत्यधिक लगाव; मिजाज में उतार-चढ़ाव (मूड स्विंग्स) या पारिवारिक अपेक्षाओं को लेकर भावनात्मक अपराधबोध के प्रति संवेदनशीलता।

• **हस्त**: लेन-देन या हस्तकला/शिल्पकार्यों में संदेह; तकनीकी विवरणों पर अत्यधिक सोचना; व्यापार में स्पष्ट पारदर्शिता की आवश्यकता।

• **श्रवण**: सलाह की गलत व्याख्या करना; सुनने से संबंधित समस्याएं या गुरुओं और बड़ों द्वारा गलत समझे जाने की भावना।

मंगल-शासित नक्षत्र (ऊर्जा और प्रेरणा प्रबंधन)

• **मृगशिरा**: बेचैन खोज; बिखरा हुआ ध्यान; चीजों को गलत जगह रखने या परियोजनाओं को बीच में ही छोड़ने की प्रवृत्ति।

• **चित्रा**: सौंदर्यशास्त्र या डिज़ाइन के विवरणों को लेकर मतभेद; वास्तुकारों (आर्किटेक्ट्स), इंजीनियरों या तकनीकी साथियों के साथ अहंकार का टकराव।

• **धनिष्ठा**: सामूहिक आय या संगीत/कलात्मक पहचान में देरी; साझेदारों या भाई-बहनों के साथ वित्तीय विवाद।

राहु-शासित नक्षत्र (अपरंपरागत कर्म)

• **आर्द्रा**: भावनात्मक उथल-पुथल या अचानक आने वाला दुख जो अंततः बड़े बौद्धिक या आध्यात्मिक परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त करता है।

• **स्वाति**: स्वतंत्रता की बेचैन चाह; व्यापार या व्यवसाय में तब तक उतार-चढ़ाव जब तक कि जीवन के मध्य में स्थिरता न आ जाए।

• **शतभिषा**: जटिल स्वास्थ्य निदान या गोपनीय आदतें; गुप्त, गूढ़ या वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों में स्वाभाविक रुचि।

बृहस्पति-शासित नक्षत्र (ज्ञान और मूल्यों का तालमेल)

• **पुनर्वसु**: स्थायी आवास या पारिवारिक सुख प्राप्त करने से पहले बार-बार प्रयास करने की आवश्यकता; समृद्धि की धीमी वापसी।

• **विशाखा**: एक ही दिशा में अत्यधिक जुनून जो ईर्ष्या या मानसिक-शारीरिक थकान की ओर ले जाता है; लक्ष्यों में संतुलित तालमेल की आवश्यकता।

• **पूर्वाभाद्रपद**: अत्यधिक आंतरिक तीव्रता या आध्यात्मिक तपस्या; पारंपरिक सामाजिक मानदंडों से अलगाव महसूस होना।

शनि-शासित नक्षत्र (अनुशासन और संरचना की परीक्षा)

• **पुष्य**: परिवार के प्रति दायित्व की गहरी भावना; अत्यधिक भौतिक निर्भरता और स्थिरता के बावजूद भावनात्मक संतुष्टि में देरी।

• **अनुराधा**: समूहों के बीच भी अकेलापन महसूस होना; करीबी मित्रों या कॉर्पोरेट नेटवर्क पर भरोसा करने में शुरुआती कठिनाई।

• **उत्तरा भाद्रपद**: गहरा एकांत और अवचेतन या आध्यात्मिक शोध में तीव्र रुचि; उम्र के साथ धीमी और निरंतर प्रगति।

बुध-शासित नक्षत्र (बुद्धि और संचार)

• **आश्लेषा**: तीव्र मनोवैज्ञानिक आत्मरक्षा; करीबी रिश्तों में संशयवाद या विश्वासघात का डर रहने की प्रवृत्ति।

• **ज्येष्ठा**: कम उम्र में जिम्मेदारियों के कारण मानसिक तनाव; पारिवारिक दायरे में अधिकार या पैतृक संपत्ति को लेकर विवाद।

• **रेवती**: परिस्थितियों को अत्यधिक आदर्शवादी मानना जिससे मामूली वित्तीय नुकसान हो सकता है; गहरी सहानुभूति जिसके लिए सुरक्षात्मक सीमाएं तय करने की आवश्यकता होती है।

गुलिक के लिए मुख्य उपाय

• **शिव / विष्णु पूजा**: महामृत्युंजय मंत्र या विष्णु सहस्रनाम का नियमित पाठ गुलिक के सूक्ष्म विष के प्रभाव को शांत करता है।

• **तिल के तेल का दीपक जलाना**: शनिवार की शाम को किसी शिव मंदिर या खुले स्थान पर बने पूजा स्थल के पास तिल के तेल का दीपक जलाएं।

• **ईमानदार आचरण**: चूंकि गुलिक कार्मिक दोषों को बढ़ा देता है, इसलिए वित्तीय लेन-देन में पूरी पारदर्शिता बरतने से इसके अशुभ प्रभाव शांत रहते हैं।

https://astroarpitanath.com/hindi/gulika-effects-on-27-nakshatras/
ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।